रास्ते में उसे दो तलाई मिली, तलाई में पानी तो काफी भरा था, और एक तलाई का पानी दूसरी में जा रहा था । लेकिन जानवर, पशु–पक्षी कोई भी इन तलाईयों का पानी नहीं पीता था, भूल से जो भी पानी पी लेता था, उसकी मृत्यु हो जाती थी।

बहू को दोनों तलाइयों ने पूछा, 'बहन ! तुम कहाँ जा रही हो।' तब बहू बोली, 'शीतला माता ने मुझे श्राप दिया है, मैं श्राप का निवारण कराने जा रही हूँ।

यह सुन तलाइयों ने कहा, 'बहन हमारा पानी कोई भी नहीं पीता है और जो भी पीता है उसकी मृत्यु हो जाती है। हमने ऐसा कौनसा पाप किया है ? हमारे पापों का भी निवारण पूछ लेना।

बहू जब आगे चली तो दो सांड मिले, जिनके गले में घट्टी के पाट बंधे थे । यह दोनों हमेशा आपस में लड़ते रहते थे । बहू को देखकर दोनों सांड बोले, 'बहन! तू कहाँ जा रही है ?' बहू बोली, 'मैं शीतला माता के पास मेरे श्राप का निवारण कराने जा रही हूं तो दोनों सांड बोले, ' हम हमेशा लड़ते ही रहते हैं, हमने ऐसा कौन–सा पाप किया है। अतः कृपा करके हमारे पाप का निवारण भी पूछकर आना ।' बहू हाँ कहकर आगे बढ़ी।

वहाँ से आगे चलने पर छोटी बहू ने देखा कि बोर के झाड़ के नीचे एक वृद्धा अपने बिखरे हुए बालों को दोनों हाथों से खुजलाते हुए बैठी है। उसने बहू को देखकर अपने पास बुलाया और पूछा कि, 'अरे बाई! इस टोकरी में क्या लेकर जा रही है।'

तब बहू ने अपना दुःखड़ा कह सुनाया, लेकिन वृद्धा ने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया, और अपने स्वार्थ की बात करते हुए बोली – अरे बाई! मेरा माथा जरा देख ले, यह जूएँ तो मेरा खून पी गई है।

बहू की शीतला माता के पास जाने की जल्दी थी, फिर भी उसको बुढ़िया पर दया आई, और उसने मृत बच्चे को बुढ़िया की गोद में देकर उसकी जूएँ निकालने लगी। बुढ़िया के माथे से सारी जूएँ निकल जाने पर खुजली मिट गई। बुढ़िया ने बहू को आशीर्वाद देते